

# गांधी युग

- ☞ महात्मा गांधी का जन्म 2 oct.1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ।
- ☞ इनका पूरा नाम मोहन दास करमचंद्र गांधी था जबकि प्यार से इन्हें लोग भाई कहते थे।
- ☞ इनके पिता कमरचंद्र गाँधी राजकोट शहर में दिवान थे। इनकी माता पुतलीबाई थी। 1883 ई० में 14 वर्ष की अवस्था में कस्तुरबा गांधी से इनका विवाह हो गया। इनके चार पुत्र थे। हरिलाल, मनिलाल, रामदास देवदास तथा यमुना लाल बजाज को इनका पांचवां (दत्तक) पुत्र कहा जाता है।
- ☞ 1888 में प्रथम पुत्र का जन्म तथा सितम्बर में ये अपनी उच्च शिक्षा के लिए लंदन चले गए और वहाँ वकालत की पढ़ाई (LLB) पूरी करके बैरिस्टर बने।
- ☞ 1891 में पढ़ाई पूरी कर भारत लौटे और बम्बई तथा राजकोट में वकालत आरम्भ की।
- ☞ एक गुजराती व्यापारी दादा अब्दुल्ला का केश लड़ने के लिए 1893 में वो दक्षिण अफ्रिका चले गए। जहाँ उन्हें रंगभेद का सामना करना पड़ा।
- ☞ 1894 में वहीं रहकर समाजिक कार्य तथा वकालत करने का फैसला-नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की।
- ☞ दक्षिण अफ्रीका में नेटाल क्षेत्र के समीप डरबन में पिटरमार्टिन वर्ग स्टेशन पर इन्हें ट्रेन से निचे ढकेल दिया गया, क्योंकि प्रथम श्रेणी में भारतीयों और कुत्तों को जाना मना था।
- ☞ इस घटना के बाद ब्रिटिश सरकार को गांधीजी से माफी मांगनी पड़ी। दक्षिण अफ्रिका में महात्मा गांधी ने भारतीयों के लिए अपना पहला सत्याग्रह किया।
- ☞ 1896 में अपने परिवार के साथ नेटाल गये।
- ☞ 1901 में भारत रवाना हुए तथा दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतीयों को आश्वासन दिया कि वे जब भी आवश्यकता महसूस करेंगे वे वापस लौट आएंगे।
- ☞ 1902 में भारतीय समुदाय द्वारा बुलाए जाने पर दक्षिण अफ्रीका पुनः वापस लौटे।
- ☞ 1903 में जोहान्सबर्ग में वकालत का दफ्तर खोला।
- ☞ इन्होंने 1904 में दक्षिण अफ्रीका में शिल्पकार कालेनवाख की मदद से फिनिक्स फर्म (Phenix form) की स्थापना किया। महात्मा गांधी ने Indian opinion नामक सप्ताहिक पत्रिका लिखी जो कई भाषाओं में प्रकाशित हुई किन्तु इसका प्रकाशन उर्दू में नहीं हुआ।
- ☞ 1906 में आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लिया। एशियाटिक आर्डिनेंस के विरुद्ध जोहान्सबर्ग में प्रथम सत्याग्रह अभियान आरम्भ किया।
- ☞ 1907 में 'ब्लैक एक्ट'-भारतीयों तथा अन्य एशियाई लोगों के जबरदस्ती पंजीकरण के विरुद्ध सत्याग्रह।
- ☞ 1908 में सत्याग्रह के लिये जोहान्सबर्ग में **प्रथम बार कारावास** दण्ड आंदोलन जारी रहा तथा द्वितीय सत्याग्रह में पंजीकरण प्रमाणपत्र जलाए गए। पुनः कारावास दण्ड मिला।
- ☞ 1909 : जून-भारतीयों का पक्ष रखने इंग्लैण्ड रवाना हुए और नवम्बर में दक्षिण अफ्रिका से वापसी के समय जहाज में 'हिन्द-स्वराज' (पुस्तक) लिखी।
- ☞ मई 1910 में जोहान्सबर्ग के निकट टॉलस्टॉय फार्म की स्थापना।
- ☞ 1913 में रंगभेद तथा दमनकारी नितियों के विरुद्ध सत्याग्रह जारी रखा- 'द ग्रेट मार्च' का नेतृत्व किया जिसमें 2000 भारतीय खदान कर्मियों ने न्यूकासल से नेटाल तक की पदयात्रा की।
- ☞ दक्षिण अफ्रिका में ही महात्मा गांधी ने गोपालकृष्ण गोखले को अपना राजनैतिक गुरु मान लिया।
- ☞ महात्मा गाँधी को आंदोलन की प्रेरणा रूस के विद्वान लियो टॉल्स टॉय से मिली। इन्हीं से महात्मा गांधी सर्वाधिक प्रभावित थे।

- ☞ महात्मा गांधी को भुख हड़ताल की प्रेरणा जर्मन विद्वान रस्कीन से मिली।
- ☞ महादेव देसाई महात्मा गाँधी के (सलाहकार) सचिव थे। अमेरिकी पत्रकार मिलर महात्मा गाँधी का सहयोगी था।

### महात्मा गाँधी की उपाधिया

- ☞ अंग्रेजों ने गाँधीजी को सारजेण्ट की उपाधि दी, क्योंकि गाँधीजी ने प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश सेना में बहुत से भारतीयों को भर्ती करवाया।
- ☞ अंग्रेजों का सहयोग करने के कारण महात्मा गाँधी को ब्रिटिश सरकार ने कैसर-ए-हिन्द की उपाधि दी।
- ☞ चम्पारण सत्याग्रह की सफलता के बाद रविन्द्रनाथ टैगोर ने महात्मा की उपाधि दी।
- ☞ जवाहर लाल नेहरू ने इन्हें बापु की उपाधि दिया। सुभाष चंद्र बोस ने इन्हें राष्ट्रपिता की उपाधि दिया।
- ☞ विस्टन चर्चिल (PM of England) ने इन्हें अर्द्धनग्न फकीर कहा।
- ☞ शेख मुजिवुल रहमान ने इन्हें जादुगर की उपाधि दिया।
- ☞ खुदाई खिदमत गार संस्था ने मंगल बाबा की उपाधि दिया।
- ☞ आइंस्टीन ने कहा कि आने वाले 100, 200 साल के बाद सायद ही कोई विश्वास करे की ऐसे हाडमांस के शरीर वाला व्यक्ति इस पृथ्वी पर था, जिसने इतना बड़ा आंदोलन कर दिया।
- ☞ 9 Jan. 1915 को महात्मा गांधी भारत लौट आए आज भी इस दिन को प्रवासी भारतीय दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- ☞ मई में कोचरब में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की, जो 1917 में अहमदाबाद में साबरमती नदी के पास साबरमती आश्रम की स्थापना किया। इस आश्रम के लिए धन अम्बालाल साराबाई ने दिया। इस आश्रम के अंदर महात्मा गांधी की कुटीया हृदय कुंज कहलाता था।
- ☞ 1916 में महात्मा गांधी ने कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में भाग लिया इसकी अध्यक्षता अम्बिका चंद्र मजुमदार कर रहे थे। इसी अधिवेशन में राजकुमार शुक्ल ने गांधी जी को चम्पारण के निल्ले जमिंदारों के तीन कठिया पद्धति (3/20) की जानकारी दी और उन्हें चम्पारण आने का आग्रह किया।
- ☞ 1917 में महात्मा गांधी राजेन्द्र प्रसाद तथा अनुग्रहनारायण सिन्हा के साथ चम्पारण पहुंचे और वहाँ सफल सत्याग्रह किए। अंग्रेजों ने तिनकठिया पद्धति समाप्त कर दी यह आंदोलन निलहे जमिंदारों के विरुद्ध था। यह भारत में महात्मा गांधी का पहला सफल आंदोलन था इसकी सफलता के बाद रविन्द्र नाथ टैगोर ने इन्हें महात्मा की उपाधि दिया।
- ☞ 1918 में महात्मा गांधी ने खेड़ा सत्याग्रह किया और किसानों के बढ़े हुए टैक्स को माफ कराया।
- ☞ 1918 में ही महात्मा गांधी ने अहमदाबाद मिल मजदूर सत्याग्रह किया। इस सत्याग्रह में पहली बार महात्मा गांधी ने भुख हड़ताल का प्रयोग किया।

**Remarks :** महात्मा गांधी के आंदोलन के चार चरण थे—

- (i) सत्याग्रह (ii) भुखहड़ताल (iii) बहिष्कार (iv) हड़ताल

### रोलेक्ट एक्ट ( 19 मार्च 1919 )

- ☞ भारतीय क्रांति को दबाने के लिए सिडनी रोलेक्ट ने Anarchial and Revolutionary Act लाया। जिसके तहत सक के आधार पर पुलिस किसी को भी गिरफ्तार कर सकती है।
- ☞ 30 मार्च 1919 को स्वामी श्रद्धानंद ने कर मत दो आंदोलन किया। जबकि कर मत दो का नारा बल्लभ भाई पटेल ने दिया है।

- 6 अप्रैल 1919 को गाँधी जी द्वारा देशव्यापी हड़ताल किया गया।
- 8 अप्रैल 1919 को गाँधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया।
- इस सत्याग्रह का केन्द्र पंजाब था।
- इसे बिना दलील बिना अपील, बिना वकिल का कानून कहा गया। गांधी जी ने इसे काला कानून कहा। इसी कानून के तहत पंजाब के दो नेता सैफुद्दीन किचलु तथा सत्यपाल को गिरफ्तार कर लिया गया।

### जालियावाला बाग (13 April 1919)

- रौलेट एक्ट के विरोध में अमृतसर के जालियावाला बाग में लोग इकट्ठा हुए थे।
- इस समय भारत का वायसराय (गवर्नर) चेम्सफोर्ड था।
- पंजाब का लेफ्टिनेंट गवर्नर O डायर ने गोरखा रेजीमेंट के ब्रिगेडियर R डायर को जालियावाला बाग भेजा। जहाँ R डायर ने निहत्थे लोगों पर गोलियां चलवा दी।
- ऑकड़ों के अनुसार मरने वालों की संख्या 379 थी लेकिन वास्तव में इससे कहीं ज्यादा लोग मारे गए।
- हंस राज नामक भारतीय ने जालियावाला बाग की सूचना अंग्रेजों को दी थी।
- जालियावाला बाग नरसंहार के कारण पूरे भारत में विरोध हुआ।
- गांधी जी ने कैसेरे हिन्द की उपाधि, रविन्द्र नाथ टैगोर ने सर की उपाधि त्याग दिया। डा० शंकर नायर ने वायसराय की कार्य करीणी परिषद् से त्याग पत्र दे दिया।
- कांग्रेस ने इस घटना की जांच के लिए मदन मोहन मालविय के नेतृत्व में एक समिति बनाई इस समिति ने कहा की यह जनरल डायर द्वारा जल्दबाजी में लिया गया मुख़तापूर्ण कदम था।
- अंग्रेजों ने इसके जाँच के लिए हंटर कमिशन का गठन किया। इस आयोग में तीन भारतीय और पाँच अंग्रेज सदस्य थे। इस कमीशन में जनरल डायर को सही ठहराया। जनरल O डायर को लंदन में सम्मान के रूप में तलवार और 2600 पौंड की धनराशि दिया गया।
- 1940 में अधम सिंह ने लंदन जाकर जनरल O डायर की गोली मारकर हत्या कर दी।

### होमरूल आंदोलन (1916)

- यह आयरलैण्ड से प्रेरित था इसकी शुरुआत दो चरणों में हुई पहला चरण बालगंगाधर तिलक ने April 1916 में महाराष्ट्र से प्रारंभ किया।
- इसी आंदोलन के दौरान उन्होंने कहा कि “स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर ही रहूंगा।” वैलेटाइन सिरोल ने तिलक जी को भारतीय अशांति का जनक (Indian Arnest) कहा था। जिस कारण ये उसपर केश करने लंदन चले गए जिस कारण 1918 में होमरूल का पहला चरण समाप्त हो गया।
- Remarks :** बालगंगाधर तिलक को लोक मान्य कहा जाता है। इनकी अर्थी को महात्मागांधी तथा शौकत अली ने कंधा दिया।
- होमरूल का दुसरा चरण सितम्बर, 1926 में एनी बेसेंट ने प्रारंभ किया। इनका होमरूल आंदोलन पुरे भारत में फैल गया। किन्तु अंग्रेजों ने एनी बेसेंट को गिरफ्तार कर लिया और जब 1918 में उन्हें छोड़ा तो होमरूल आंदोलन पूरी तरह समाप्त हो चुका था। होमरूल का उद्देश्य प्रांतीय स्वायत्ता (राज्यों का स्वशासन) थी।

### खिलाफत आंदोलन

- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेजों ने मुसलमानों से यह वादा किए थे कि वे तुर्की का विभाजन नहीं करेंगे किन्तु प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अंग्रेजों ने तुर्की का विभाजन कर दिया। उसे आपस में बांट दिया। इसका विरोध तुर्की के खलीफा ने किया भारत में इसी विभाजन के विरोध में खिलाफत आंदोलन प्रारंभ किया गया। खिलाफत आंदोलन को मोहम्मद अल्ली तथा शौकत अली ने शुरू किया था। अखिल भारतीय खिलाफत की बैठक दिल्ली के फिरोज साह कोटला मैदान में हुई 23 Nov. 1919 को इसकी अध्यक्षता महात्मा गांधी ने कर दिया। अंतर्राष्ट्रीय दबाव में आकर अंग्रेजों ने तुर्की के विभाजन को रद्द कर दिया और भारत में भी खिलाफत आंदोलन समाप्त हो गया। महात्मा गांधी को मुसलमानों का भी सहयोग प्राप्त हो गया।

### असहयोग आंदोलन (1 Aug. 1920)

- यह महात्मा गांधी द्वारा चलाया गया पहला जन आंदोलन था, क्योंकि इसमें पूरे देश की जनता ने भाग लिया था। महात्मा गांधी ने कहा था कि यदि हमसब मिलकर अहिंसक रूप से अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार करें तो निश्चित ही एक वर्ष में आजादी मिल जाएगी।

- ☞ महात्मा गांधी के कहने पर ही वकिलों ने न्यायालय जाना छोड़ दिया। विद्यार्थियों ने अंग्रेजों का स्कूल छोड़ दिया नाई, धोबी, मोची, बावर्ची ने अंग्रेजों का काम करने से मना कर दिया। लोग अंग्रेजों के वस्तुओं के खरीदना छोड़ दिए और दुकानदार उसे बेचना छोड़ दिए। इससे अंग्रेजों को भारी नुकसान हुआ। किन्तु यह आंदोलन आजादी नहीं दिला सकता था।
- ☞ दक्षिण भारत से असहयोग आंदोलन गोपालचारी ने किया। इसी आंदोलन के दौरान मौलाग मजहूरल हक ने पटना में सदाकत आश्रम की स्थापना की। C.R. दास तथा मोतीलाल नेहरू ने प्रारंभ में इस आंदोलन का विरोध किया किन्तु बाद में वे भी इस आंदोलन से जुड़ गए।
- ☞ इस आंदोलन में जेल जानेवाले पहले पुरुष C.R. दास थे तथा पहली महिला वसंती देवती थी। 5 फरवरी, 1922 को गोरखपुर के चौड़ी-चौड़ा में भीड़ ने 22 पुलिस वालों को ज़िंदा जला दिया। इस घटना के समय महात्मा गांधी गुजरात में थे। इन्होंने इस हिंसा से आहत होकर 12 फरवरी, 1922 को यह आंदोलन स्थगित कर दिया। महात्मा गांधी के इस कदम का पूरे भारत में विरोध हुआ।
- ☞ जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि “यदि काश्मीर किसी गांव हिंसा हुआ है तो उसका सजा कन्याकुमारी के किसी गांव को क्यों दी जाए।”
- ☞ सुभाष चन्द्र बोस ने कहा कि “जब जनता का उत्साह अपने चरम पर था तो गांधी जी द्वारा आंदोलन स्थगित करना एक मुर्खता पूर्ण निर्णय था।” 10 मार्च, 1922 को जनता को भड़काने के आरोप में गांधी जी को 6 वर्ष जेल की सजा हुई। 1924 में गांधीजी को खराब स्वास्थ्य के कारण जेल से रिहा कर दिया गया। 1924 में गांधी जी ने बेलग्राम कांग्रेस अधिवेशन (केरल) की अध्यक्षता की।

### स्वराज दल

- ☞ 1922 में कांग्रेस के गया अधिवेशन में स्वराज पार्टी के गठन की चर्चा हुई। 1 जनवरी, 1923 को स्वराज पार्टी का गठन इलाहाबाद में हो गया। इसके पहले अध्यक्ष C.R. Das तथा महासचिव मोतीलाल नेहरू बने। यही दोनों इस पार्टी के संस्थापक थे। इस पार्टी का मुख्य उद्देश्य था केन्द्रीय विधान सभा (संसद) में घुसकर सरकारी काम में बाधा डालना। इसके लिए इन्होंने चुनाव लड़ने का निर्णय लिया और जनता से यह वादा किया कि वे कोई भी सरकारी पद नहीं लेंगे। केन्द्रीय विधान सभा के 100 सिरों में स्वराज दल को 42 सिरे प्राप्त हुई जिस कारण 1923 के चुनाव में स्वराज पार्टी सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी बनी।
  - (i) सरकारी काम में बाधा डालना
  - (ii) राज्यों की स्वायत्तता (स्वतंत्रता)
  - (iii) डोमेनियन स्टेट
- ☞ स्वराज दल ने ली कमीशन की रिपोर्ट नहीं लागू होने दिया जो जाती की उच्चता को बरकरार रखने की बात कर रहा था। स्वराज दल ने मुडीमैन कमीशन का भी रिपोर्ट पारित नहीं होने दिया जो राज्यों में स्वतंत्रता न लाकर द्वैध शासन की बात कर रहा था। विठ्ठल भाई पहले भारतीय बने जो विधान सभा के अध्यक्ष बने ये स्वराज दल के थे। मोतीलाल नेहरू ने भी सरकारी पद ले लिया जिस कारण जनता का विश्वास इस पार्टी से उठने लगा और 1928 आते-आते यह पार्टी समाप्त हो गई।
- ☞ **बलसाड सत्याग्रह (1924) :** यह गुजरात के बलसाड से डकैती कर के विरुद्ध प्रारंभ हुआ। अंग्रेजों को डकैती कर रद्द करना पड़ा। इसका नेतृत्व बल्लभ भाई पटेल ने किया।
- ☞ **वायकोण सत्याग्रह (1924-25) :** यह केरल के मालवाड तट से प्रारंभ हुआ। इजवा जनजाती के लोगों को मंदिर के आगे के रास्ते पर जाने से रोका गया था जिसके विरुद्ध T.K. माधवन ने यह आंदोलन प्रारंभ किया। यह आंदोलन सफल रहा।

### साइमन कमीशन

- ☞ 1919 के भारत शासन अधिनियम में कहा गया था कि अधिनियम पारित होने के दस वर्ष बाद एक संवैधानिक आयोग की नियुक्ति की जाएगी, जो यह जाँच करेगी कि भारत उत्तरदायी शासन की दिशा में कहाँ तक प्रगति करने की स्थिति में है।

- ☞ आयोग की नियुक्ति तो 10 वर्ष के बाद की जानी चाहिए थी, लेकिन ब्रिटेन की तत्कालीन कंजरवेटिव सरकार ने दो वर्ष पूर्व ही साइमन कमीशन की नियुक्ति (8 नवम्बर, 1927) कर दी, क्योंकि उसे आशंका थी कि दो वर्ष बाद लेबर पार्टी की सरकार भारत समर्थक सदस्यों वाले वैधानिक आयोग की नियुक्ति कर सकती है।  
किन्तु भारतीयों में आपसी मतभेद बहुत अधिक था। जिस कारण भारत के राज्य सचिव वरकेन हेड ने 1927 को साइमन कमिशन का गठन करवाया। इस 7 सदस्यों वाले आयोग के सभी अंग्रेज सदस्य थे। इसके अध्यक्ष साइमन थे। क्लीमेंट एटली भी इसके सदस्य थे जो आगे जाकर ब्रिटेन के PM बने। साइमन कमीशन 1919 की अधिनियम की जाँचकरने आया था। इसका मूल नाम Indian Statuery Commission (भारतीय वैधानिक आयोग) था। फरवरी, 1928 को जब साइमन कमीशन भारत पहुँचा तो उसका अत्यधिक विरोध हुआ। इसी विरोध प्रदर्शन में पंजाब में लालालाजपत राय के ऊपर साइडिस के नेतृत्व में पुलिस लाठी चार्ज हो गई जिसमें चोट लगने से लालालाजपत राय की मृत्यु हो गई। लाला जालपता राय ने कहा कि मेरे पीठपर परी एक-एक लाठी अंग्रेजों के ताबुत की आखिरी कील साबित होगी। साइस की हत्या का आरोप लगाकर भगत सिंह को फाँसी दे दिया गया। समस्त भारत ने इस आयोग का विरोध किया और इसे श्वेत कमिशन कहा। दक्षिण भारत कि जस्टिस पार्टी तथा युअनिष्ट पार्टी ने इसका समर्थन किया। विरोध के बावजूद साइमन कमिशन ने 1930 में अपनी रिपोर्ट दे दी। साइमन कमिशन के रिपोर्ट के आधार पर ही भारत शासन अधिनियम 1935 पारित हुआ। इस अधिनियम के द्वारा म्यामांर (वर्मा) को भारत से अलग कर दिया गया। इसी अधिनियम के द्वारा पहली बार भारत में प्रांतिय चुनाव 1937 में करा दिया गया। इस चुनाव में कांग्रेस को बड़ी जीत हासिल हुई। 8 राज्यों में कांग्रेस की सरकार बन गई। पंजाब तथा सिंध में मुस्लिम लीग की सरकार बनी।
- ☞ **नेहरू रिपोर्ट (1928)** – साइमन कमिशन के विरोध के कारण भारत के राज्य सचिव वरकेन हेड ने भारतीयों को यह चुनौती दी यदि सर्व सहमती से वह अपना कानून बना लेंगे तो मैं उसे ब्रिटेन में पारित करा दूंगा। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए मोतीलाल नेहरू ने नेहरू रिपोर्ट तैयार किया जिसका मुख्य उद्देश्य Domenian State (स्वायत राज्य) की स्थापना करना था किन्तु मुस्लिम लीग ने इसे स्वीकार नहीं कि जिस कारण नेहरू रिपोर्ट पारित नहीं हो सका।
- ☞ **14 सूत्री जिन्ना फार्मुला** – नेहरू रिपोर्ट के प्रतिउत्तर में जिन्ना ने 14 सूत्री जिन्ना फार्मुला दिया अंग्रेजों ने इसे भी स्वीकार नहीं किया।
- ☞ **लाहौर अधिवेशन (1929)** : इसकी अध्यक्षता जवाल लाल नेहरू ने किया इसमें पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित किया गया। साथ ही यह निर्णय लिया गया कि हर 26 जनवरी को स्वाधिनता दिवस मनाया जाएगा। इसी कारण 26 नवम्बर, 1949 को संविधान बनने के बावजूद इसे 26 जनवरी, 1950 को लागू किया गया। इसी अधिवेशन में लाहौर में रावी नदी के तट पर मध्य रात्री को जवाहरलाल नेहरू ने तिरंगा लहराया और कहा कि मध्यरात्री पर जब पूरी दुनिया सो रही है भारत अपनी स्वतंत्रता की न्यू रख रहा है।

## दाण्डी मार्च

गाँधी जी ने इरविन को अपनी 11 सूत्री माँग सौंप दी। किन्तु इरविन ने उसे अस्वीकार कर दिया। जिस कारण महात्मा गाँधी ने 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से अपने 78 (80) SC (अनुसूचित जाती) के सहयोगियों के साथ नामक कानून तोड़ने के लिए दांडी की ओर चल दिए। उनके साथ सरोजनी नायडू भी थी। 240 mile ( $240 \times 1.52 = 385$  km) की यात्रा को 24 दिन में पूरा किया गया। 6 अप्रैल 1930 को दाण्डी यात्रा पूरी हुई और गाँधी जी ने दाण्डी में आसवन विधि द्वारा नमक बनाया। इसी के साथ महात्मागांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ कर दिया।

## सविनय अवज्ञा आंदोलन (Civil Disobidance Movement) - 1930

- ☞ दांडी यात्रा की सफलता को देखते हुए गाँधी जी ने इस आंदोलन को प्रारंभ किया। कश्मिर के क्षेत्र से खान अब्दुल गफ्फार खान ने खुदाई खिदमतगार संस्था का गठन किया। इन्होंने लाल कुरती सेना का गठन किया इन्हें सीमांत गांधी कहा जाता है। छपरा के कैदियों ने नंगा विद्रोह कर दिया क्योंकि वे स्वदेशी वस्त्रों की मांग कर रहे थे। दक्षिण भारत में इसका नेतृत्व



चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने किया। मुम्बई में इसी आंदोलन के दौरान सरोजनी नायडू ने 25000 आंदोलनकारियों को लेकर धरसना नामक स्थान पर पहुंची किन्तु इसकी सूचना पहले ही अंग्रेजों को लग गई और अंग्रेजों ने इस आंदोलन को दबा दिया। इसी आंदोलन के दौरान लड़कों की बांदरी सेना तथा लड़कियों की मंजरी सेना का गठन किया गया।

यह आंदोलन आंशिक रूप से सफल रहा क्योंकि इसी आंदोलन के कारण अंग्रेजों ने Tax में कटौती किया तथा मादक पदार्थ जैसे-सिगरेट तथा शराब के उत्पादन में कमी किया। जब सविनय अवज्ञा आंदोलन चल रहा था तो लंदन में गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा था क्योंकि भारत के इस आंदोलन के कारण कोई कांग्रेस का प्रतिनिधि वहाँ भाग लेने नहीं गया।

जिस कारण इंग्लैण्ड से इरविन पर दबाव आने लगा कि वे कांग्रेस को इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए भेजे। इसी दबाव में आकर इरविन ने समझौता करने का विचार किया।

☞ इरविन ने महात्मा गांधी से यह आग्रह किया गया कि यदि वे सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित करके गोलमेज सम्मेलन में भाग लेंगे तो गांधीजी के कुछ बातों को मान लिया जाएगा जिससे सबसे प्रमुख राजनीतिक कैदियों की रिहाई थी। इस समझौता के तहत भगत सिंह को नहीं रिहा किया गया क्योंकि उनपर अपराधिक मुकदमा था।

☞ **गाँधी-इरविन समझौता (दिल्ली-समझौता)**— 5 मार्च, 1931 को दिल्ली में एक समझौता हुआ, इस समझौते को गाँधी-इरविन समझौता कहा जाता है।

**Note :** सरोजनी नायडू ने गांधी तथा इरविन को दो महात्मा कहा। इस समझौते के तहत 7 Sep. 1931 को महात्मा गाँधी S.S. Rajputana नामक पानी वाला जहाज से लंदन पहुंचे। जहाँ विस्टन चर्चिल ने उन्हें अर्द्धनग्न फकीर कहा। इस सम्मेलन में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री रैमजे मैकडोनाल्ड ने दलितों के लिए अलग क्षेत्र अर्थात् समुदायिक पंचांग (Communal Award) की बात कही। जिस कारण महात्मागांधी सम्मेलन को छोड़कर भारत लौट आए और पुनः सविनय अवज्ञा आंदोलन को आगे बढ़ाया। महात्मागांधी को गिरफ्तार करके पुना के यरवदा जेल में कैद कर दिया गया।

### गोलमेज सम्मेलन

भारतीय प्रशासन पर चर्चा करने के लिए लंदन में गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया।

**प्रथम गोलमेज सम्मेलन (12 Nov. 1930 - 19 Jan. 1931)** — इस सम्मेलन में कांग्रेस का कोई प्रतिनिधि भाग नहीं किया क्योंकि महात्मा गांधी सविनय अवज्ञा आंदोलन कर रहे थे।

**द्वितीय गोलमेज सम्मेलन - (7 Sep 1931)**— इस सम्मेलन में महात्मा गाँधी ने भाग लिया किन्तु ब्रिटिश प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड ने समुदायिक पंचांग की बात कही जिसकारण गांधी जी सम्मेलन छोड़कर चले आए।

**तृतीय गोलमेज सम्मेलन (17 Nov. 1932 - 24 Dec. 1932)** — इस सम्मेलन में कांग्रेस ने भाग नहीं लिया। इसी सम्मेलन में मैकडोनाल्ड ने दलितों के लिए पृथक् क्षेत्र (सामुदायिक पंचांग की घोषणा कर दी।

**Note :** तेज बहादुर शफरू तथा भीमराव अम्बेदकर तीनों ही गोलमेज सम्मेलन में भाग लिए थे।

**पूना समझौता (24 Sep 1932)** — जैसे ही समुदायिक पंचांग की घोषणा हुई और दलितों को आरक्षण सहित पृथक् क्षेत्र दिया गया महात्मा गांधी ने पूना के यरवदा जेल में अनशन कर दिया। तेज बहादुर शफरू तथा मदनमोहन मालवीय के सहयोग से गांधी एवं अम्बेदकर के बीच समझौता हुआ। जिसे पूना Pact कहते हैं इसके तहत दलितों के आरक्षित सीट को 71 से बढ़ाकर 148 कर दी गई अर्थात् दलितों को आरक्षण सहित संयुक्त निर्वाचन क्षेत्र दिया गया।

### हरिजन सेवक संघ

महात्मागांधी ने दलितों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए उन्हें हरिजन नाम दिया। 1932 में अखिल भारतीय अस्पृश्यता संघ (All Indian Untouchability League) की स्थापना किया जो आगे चलकर हरिजन सेवक संघ कहलाया।

